

ओ३म्

वेदान्त विवेक

(वेदादि सच्छास्त्र प्रमाण समन्वितः)
योगक्रिया मर्मज्ञ पराविद्या विशेषज्ञ

श्री मत्भगवत्पूज्यपादं श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य

श्री मन् आत्मानन्द तीर्थ स्वामिना विरचित :

आर्ष योग चिकित्सालय तथा आर्ष योग विद्यापीठ के संचालक

प्रकाशकः-धर्म संस्थान आर्ष योगाश्रम

खरखौदा, मेरठ, उत्तर प्रदेश

सम्वत् २०३७ विक्रमी १९८० ईसवी

भेंट : तीन रुपया

[टिप्पणी—कृपया भेंट देकर ही पुस्तक लें]

ओ३म्

॥ सच्चिदानन्देश्वराय नमः ॥

—भूमिका—

वेदान्त विवेक पुस्तक में शरीर तथा आत्मा के विषय में प्रश्नोत्तर द्वारा विवेचन प्रस्तुत किया गया है। योगाभ्यास द्वारा आत्म साक्षात्कार करने के लिये शरीर तथा आत्मा विषयक ज्ञान प्राप्त करना अत्यावश्यक है। जो धीर पुरुष योगनिष्ठ हो आत्म दर्शन के लिए निरन्तर यत्नशील है, ऐसे मुमुक्ष एवम्, जिज्ञासु योगी जनों के प्रति उपादेयता को दृष्टिगत रखते हुए ही इस पुस्तक को लिखा गया है। अध्यात्म विद्या का आधार, शरीर, कोष, आत्मा तथा परमात्मा विषयक विवेक ही है। इनके विषय में बिना अध्ययन किये आध्यात्म विद्या को भली भांति नहीं समझा जा सकता है, अर्थात्,

स्वाध्यायाद्योगमासीत योगात्स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याययोगसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते इति ॥

स्वाध्याय पूर्वक योगाभ्यास करे, योगाभ्यास करते हुए स्वाध्याय करे। स्वाध्याय तथा योगाभ्यास की सम्पत्ति से ही परमात्मा का प्रकाश होता है।

स्वामी आत्मानन्द तीर्थ
बुधवार फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी
२०३७ विक्रमी
४ चैत्र २०३७ विक्रमी

ओ३म्

॥ सच्चिदानन्देश्वराय नमः ॥

प्रश्न (१)—शरीर किसे कहते हैं ?

उत्तर—(अ)—भोगायतनम् शरीरम् ॥

शरीर भोगों का आयतन (भोगने का आधार) है।

(आ)—भोगेन्द्रिय अर्थाश्रयम् शरीरम् ॥

भोग, इन्द्रियों तथा विषयों का आश्रय ही शरीर है। शरीर के माध्यम से ही जीवात्मा सुख दुःख तथा आनन्द को भोगता है।

"शरीरमाद्यं खलु धर्मं साधनम्"

अर्थात् शरीर ही धर्म सम्पादन का साधन है।

प्रश्न (२)—कितने शरीर हैं ?

उत्तर—छः शरीर हैं।

अ–स्थूल शरीर
आ–सूक्ष्म भौतिक शरीर
इ–अभौतिक सूक्ष्म शरीर
ई–कारण शरीर
उ–तुरीय शरीर
ऊ–साङ्कल्पिक दिव्य शरीर

प्रश्न (३)—क्या शरीरों का अवस्था भेद से विवेचन किया जा सकता है?

उत्तर—जीवात्मा की दो अवस्थाएं हैं। प्रथम् मुक्तावस्था, दूसरी बद्धावस्था। पूर्व प्रश्न के उत्तर में वर्णित छः शरीर बद्ध तथा मुक्त दोनों अवस्थाओं में पृथक्-पृथक् विभक्त हैं।

प्रश्न (४)—बद्धावस्था में जीवात्मा कितनी अवस्थाओं को प्राप्त होता है?

उत्तर—बद्धावस्था में जीवात्मा स्थूल शरीर के आश्रय से जाग्रत अवस्था को भोगता है। सूक्ष्म शरीर के आश्रय से स्वप्नावस्था को भोगता है। कारण शरीर के आश्रय से सुषुप्ति अवस्था को भोगता है। तुरीय शरीर के आश्रय से जीवात्मा समाधि अवस्था को भोगता है।

बद्धावस्था में जीवात्मा, एक साथ चार शरीरों का भोग अवस्थानुसार पृथक्-पृथक् भोगता है।

प्रश्न (५)—मुक्तावस्था में जीवात्मा कितने शरीरों का आश्रय लेता है?

उत्तर—मुक्तावस्था में जीवात्मा दो शरीरों का आश्रय लेता है।

अ—प्रथम् अभौतिक स्वाभाविक सूक्ष्म शरीर, जो नित्य रहता है तथा जीवात्मा के गुणरूप है।

आ—दूसरा नैमित्तिक साङ्कल्पिक दिव्य शरीर, जिस का भोग भोगने के लिये जीवात्मा नैमित्तिक रूप से सृजन करता है तथा निमित्त रूप भोग समाप्त होते ही नैमित्तिक शरीर भी विलय हो जाता है।

प्रश्न (६)—मुक्तावस्था को प्राप्त हुये जीवों के भोग भोगने विषयक कोई प्रमाण है।

उत्तर—यजुर्वेद की वाजसनेयी शाखा के शतपथ ब्राह्मण के चौदहवें काण्ड में मुक्तावस्था में जीवात्मा द्वारा भोग भोगने विषयक निम्नलिखित वचन है।

"शृण्वन् श्रोत्रंभवति, स्पर्शयन् त्वग्भवति,
पश्यन् चक्षुर्भवति, जिघ्रन् घ्राणं भवति,
मन्वानो मनोभवति, बोधयन् बुद्धिर्भवति,
चेतयश्चित्तम्भवत्यहङ्कुर्वाणोऽहङ्कारो भवति"

सुनने की इच्छा करने पर श्रोत्र, स्पर्श करने की इच्छा करने पर त्वचा, देखने की इच्छा करने पर नेत्र, स्वाद की इच्छा करने पर रसना, गन्ध ग्रहण करने की इच्छा करने पर घ्राण, सङ्कल्प विकल्प करते समय मन, निश्चय करने के लिये बुद्धि, स्मरण करने के लिये चित्त चित्त और अहङ्कार के अर्थ अहङ्कार रूप अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है।

उपनिषदों के शाङ्कर भाष्य में भी भली भांति मनन करने पर जीवात्मा द्वारा ब्रह्मानन्द को भोगने का स्पष्ट वर्णन मिलता है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रन्थ के "मुक्ति विषय" प्रकरण में स्पष्ट विवेचन मिलता है कि—

"स एकधा भवति, द्विधा भवति, त्रिधा भवति" इत्यादि वचनों का प्रमाण है कि मुक्त जीव सङ्कल्पमात्र से ही दिव्य शरीर रच लेता है, और इच्छा मात्र से शीघ्र छोड़ भी देता है।

प्रश्न (७)—मुक्त अवस्था में शतपथादिक ब्राह्मण ग्रन्थों से मुक्त जीव द्वारा सुखों का निर्बाध भोग, तथा न्याय दर्शन द्वारा मुक्तावस्था में दुःखों का सर्वथा अभाव मानना क्या युक्ति युक्त है?

उत्तर—पुण्यों का प्राबल्य होने पर जीवात्मा मुक्तावस्था में निर्बाध रूप से सुखों का भोग करता है, ऐसा शतपथ ब्राह्मण का प्रमाण है परन्तु भौतिक शरीर के बन्धनों से सर्वथा रहित होने के कारण दुःखों से सर्वथा मुक्त रहता है, ऐसा न्याय दर्शन का मत है।

प्रश्न (८)—क्या मुक्ति की अवधि निश्चित है?

उत्तर—मुक्ति निश्चित ज्ञान और पवित्र कर्मों का फल है। मुक्तावस्था तथा बद्धावस्था दोनों ही जीवात्मा की नैमित्तिक अवस्थाऐं हैं। निमित्त के समाप्त होने पर निमित्त जन्य परिणाम भी समाप्त हो जाता है। जीवात्मा का ज्ञान तथा कर्त्तव्य शक्ति सीमित है अतः उसके कर्मों का परिणाम भी सीमित होता है। मुक्ति इकत्तीस नील दश खरब चालीस अरब वर्षों के लिये होती है। इतने समय में छत्तीस हजार बार सृष्टि तथा प्रलय हो जाती है। मुण्डक उपनिषद् में इस विषय में निम्नलिखित प्रमाण मिलता है।

वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्था
संन्यास योगाद् यतयः शुद्ध सत्वा॥
ते ब्रह्मलोकेषु परान्त काले
परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे॥(मु० उ०)॥

अर्थ—वेदान्त रूपी विज्ञान को जिनने भली भांति समझ लिया है, संन्यास तथा योगाभ्यास द्वारा जिनने अन्तःकरण पवित्र कर लिया है, ऐसे पवित्रात्मा ब्रह्मलोक से परान्तकाल में (महाकल्प के अन्त में) मुक्त हो जाते हैं।

प्रश्न (९)—इन छः शरीरों के भोग विषयक विवेचन अवस्थानुसार क्या हैं ?

उत्तर—(१) स्थूल शरीर द्वारा जाग्रत अवस्था में स्थूल जगत को भोगा जाता है।

(२) सूक्ष्म भौतिक शरीर द्वारा स्वप्नावस्था में अन्तःकरण में विद्यमान संस्कारों को सूक्ष्म रूप में भोगा जाता है।

(३) कारण शरीर द्वारा सुषुप्ति अवस्था में सुख को भोगा जाता है।

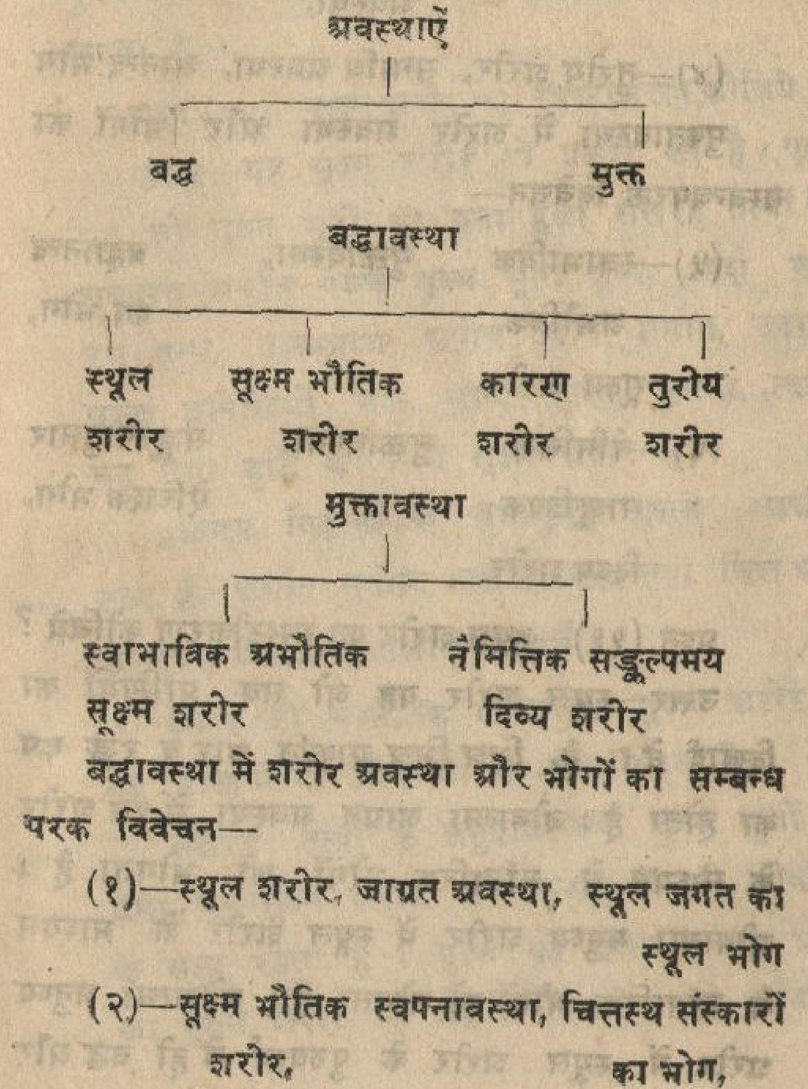
(४) तुरीय शरीर द्वारा समाधि अवस्था में आनन्द को भोगा जाता है।

(५) अभौतिक स्वभाविक सूक्ष्म शरीर द्वारा मुक्तावस्था में ब्रह्म के आनन्द को भोगा जाता है।

(६) नैमित्तिक सङ्कल्पमय दिव्य शरीर द्वारा मुक्तावस्था में नाना प्रकार के ऐच्छिक विषयों को जीवात्मा द्वारा भोगा जाता है।

प्रश्न (१०)—इन शरीरों, अवस्थाओं तथा भोगों का चित्रमय सम्बन्ध कैसे प्रदर्शित करेंगे ?

उत्तर—यह चित्र इस प्रकार है।



बद्धावस्था में शरीर अवस्था और भोगों का सम्बन्ध परक विवेचन—

(१)—स्थूल शरीर, जाग्रत अवस्था, स्थूल जगत का स्थूल भोग

(२)—सूक्ष्म भौतिक शरीर, स्वपनावस्था, चित्तस्थ संस्कारों का भोग,

(३)—कारण शरीर, सुषुप्ति पूर्ण सुख का भोग
अवस्था,

(४)—तुरीय शरीर, समाधि अवस्था, आनन्द भोग

मुक्तावस्था में शरीर अवस्था और भोगों का सम्बन्धपरक विवेचन—

(५)—स्वाभाविक मुक्तावस्था, ब्रह्मानन्द
अभौतिक का भोग,
सूक्ष्म शरीर,

(६)—नैमित्तिक मुक्तावस्था, सङ्कल्पानुसार
साङ्कल्पिक ऐच्छिक भोग,
दिव्य शरीर,

प्रश्न (११)—स्थूल शरीर का स्पष्टीकरण कीजिये ?

उत्तर—स्थूल शरीर यह जो सब प्राणियों का दिखाई देता है, भिन्न भिन्न आकृति भार व रङ्ग रूप का होता है। जीवात्मा जाग्रत अवस्था में इस शरीर के माध्यम से सांसारिक भोगों को भोगता है। जीवात्मा मनुष्य शरीर में स्थूल शरीर के माध्यम से सांसारिक भोगों को भोगता है। जीवात्मा मनुष्य शरीर में स्थूल शरीर के पुरुषार्थ से ही बद्ध और

मुक्त अवस्था को प्राप्त करता है। इसी शरीर को पुरुषार्थ जन्य योग्यता से पुनर्जन्म में शरीर प्राप्त करता है।

प्रश्न (१२)—सूक्ष्म शरीर का स्पष्टीकरण कीजिये ?

उत्तर—यह सूक्ष्म शरीर दो प्रकार का है। एक यह जो सूक्ष्म भूतों का बना हुआ सत्तरह तत्वों के समुदाय अर्थात् पञ्च सूक्ष्म भूत, शब्द, स्पर्श रूप रस गन्ध, पञ्चप्राण अपान व्यान, समान, उदान, पञ्च ज्ञानेन्द्रियों चक्षु, श्रोत्र' घ्राण, रसना, त्वक्, मन तथा बुद्धि का नाम सूक्ष्म शरीर है।

कतिपय विद्वानों के मतानुसार इसमें उन्नीस तत्व हैं, अर्थात पुर्वोक्त सत्तरह तत्व तथा चित्त और अहङ्कार मिलकर उन्नीस तत्व हैं।

दूसरा जो अभौतिक स्वभाविक सूक्ष्म शरीर है, वह मुक्ति में भी जीवात्मा के साथ रहता है।

सत्तरह तत्वों के समुदाय रूप सूक्ष्म भूतों का बना यह सूक्ष्म शरीर जन्म मरण में भी जीवात्मा के साथ रहता है। सृष्टि की प्रलय के साथ प्राणी का सूक्ष्म शरीर भी प्रकृति में लीन हो जाता है,

यदि प्रलय से पूर्व जीवात्मा मुक्त हो जाता है तो उस समय उसका सूक्ष्म शरीर भी प्रकृति में लीन हो जाता है । यदि सूक्ष्म शरीर का आयु है।

यह सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से पृथक् होने पर, दूरी के साथ निरन्तर सूक्ष्मता को प्राप्त होता जाता है तथा स्थूल शरीर से तेज का ह्रास होता जाता है । इस सूक्ष्म शरीर में जन्म जन्मान्तर में किये हुए कर्म संस्कार रूप में विद्यमान रहते हैं। स्थूल शरीर की भांति सूक्ष्म शरीर में भी भार होता है। सूक्ष्म शरीर के भार को जानने की विधि यह है।

मरणोन्मुख प्राणी को तुला पर रख उसका भार ज्ञात कर अङ्कित कर लेना चाहिये। प्राणी को मृत्यु पर्यन्त तुला पर रहने देना चाहिये । प्राणी की मृत्यु होने पर मानक (बांटो) वाला पलड़ा नीचे झुक जायेगा, तुरन्त भार ज्ञात कर पूर्वाङ्कित भार में से न्यून कर लेना चाहिये । जो अन्तर आयेगा वह सूक्ष्म शरीर का भार होगा। भार में यह अन्तर सब प्राणियों का समान होता है ।

सूक्ष्म शरीर पारदर्शी होता है तथा किसी का

अवरोधक नहीं होता। मृत्यु होने पर जीवात्मा स्थूल शरीर से पृथक् होकर सूक्ष्म शरीर सहित अन्तरिक्ष (आकाश) में चला जाता है। भ्रमण करता रहता है तथा इसी सूक्ष्म शरीर में विद्यमान संस्कारों के फलस्वरूप जीवात्मा यथा योग्य योनियों को प्राप्त होता है। सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से पृथक् होने पर पुनः स्थूल शरीर प्राप्त होने तक, त्यक्त स्थूल शरीर की आकृति का ही रहता है।

प्रश्न (१३)—क्या सूक्ष्म शरीर प्रत्यक्ष भी किया जा सकता है ?

उत्तर—प्राणी स्वप्नावस्था में कभी कभी अपने सूक्ष्म शरीर को देखता है। प्राणी का सूक्ष्म शरीर स्वप्नावस्था में दीखने पर स्थूल शरीर की आकृति का ही दीखता है। योगीजन संयम (समाधि की परिपक्वावस्था) की अवस्था में सूक्ष्म शरीर में संयम करने पर सूक्ष्म शरीर का साक्षात्कार करते हैं ।

प्रश्न (१४) कारण शरीर का स्पष्टीकरण कीजिये ?

उत्तर—कारण शरीर का सूक्ष्म शरीर से भी सूक्ष्म होता है अतः कारण शरीर का अनुभव इसके

भोग के अनुभव द्वारा ही किया जा सकता है। यह प्रकृति रूप होने से विभू है अर्थात सब प्राणियों का एक ही है। कारण शरीर के द्वारा ही निद्रावस्था में जीवात्मा पूर्ण सुख का अनुभव करता है। पूर्ण निद्रावस्था में ज्ञानी, अथवा अज्ञानी सभी प्राणी स्वयं को पूर्ण सुखी अनुभव करते हैं, अर्थात निद्रा अवस्था का अनुभव सुख ही है। निद्रा अवस्था के अभाव में पूर्ण सुख का अनुभव नहीं होता है। जाग्रत अवस्था में विषयगत सुख अथवा दुःख का अनुभव होता है परन्तु पूर्ण निद्रावस्था में जीवात्मा केवल मात्र पूर्ण रूप से सुख का अनुभव करता है। कारण शरीर का आयु भी सूक्ष्म शरीर के आयु के समान ही है।

प्रश्न (१५)—तुरीय शरीर तथा इसके भोग एवम् अवस्था को स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर—आत्म साक्षात्कार का आधार ही तुरीय शरीर है। परमात्मा ने शरीर रचना के साथ भिन्न भिन्न स्तर के भोगों का अनुभव करने के लिये शरीर में भिन्न भिन्न कोषों की रचना की है। अन्नमय

कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष तथा आनन्दमय कोष।

अन्नमय कोष ही स्थूल शरीर है। प्राणमय तथा मनोमय कोष ही सूक्ष्म शरीर है। विज्ञानमय कोष कारण शरीर है। आनन्दमय कोष ही तुरीय शरीर है।

कुछ लोगों की मान्यता है कि ईश्वर, सच्चिदानन्द स्वरूप, जीवात्मा सत्चित् स्वरूप तथा प्रकृति सत् स्वरूप है। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है तथा प्रकृति सत् स्वरूप है। परन्तु जीवात्मा केवल सत्चित् स्वरूप है इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता है। जीवात्मा चेतन स्वरूप है। चेतना और ज्ञान का नित्य सम्बन्ध है "चित् संज्ञाने" इस धातु से भी चेतनता का ज्ञान से सम्बन्ध प्रकट होता है। न्याय दर्शन के अनुसार "इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमति"

(न्याय दर्शन, १।१।१०)

इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख तथा ज्ञान आत्मा के चिह्न हैं।

आनन्द और ज्ञान का नित्य सम्बन्ध है। ईश्वर का ज्ञान अनन्त है इसीलिये ईश्वर का आनन्द भी अनन्त है, अर्थात ईश्वर आनन्द स्वरूप है। जीवात्मा अल्प और अल्पज्ञ है इसीलिये उसका आनन्द भी अल्प है। जीवात्मा के पास आनन्द मय कोष है।





श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य

श्री स्वामी आत्मानन्द तीर्थ

आचार्य

आर्ष योग विद्यापीठ, आनन्द निकेतन